Open Access, Peer Reviewed, Research Journal
©JES Printer and Publisher
Print & Online available on https://jesbulletin.in
Research Article

वास्तु शास्त्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली

डॉ प्रवीण ब्रिजलाल चंदनशिवे .

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग जेएस.ई., महाविद्यालय, जालना.

Corresponding Author: dr.chandanshive94@gmail.com

ARTICLE INFO

Received: 10/02/2024
Revised: 15/03/2024
Accepted: 01/04/2024

KEYWORDS

ABSTRACT

भारतीय वास्तुकला विभिन्न सभ्यताओं के प्रभाव से बनी गई एक तानेबाने की तरह है। इसके - विपरीत अजंता और एलोरा की प्राचीन गुफाएं चट्टान को काटकरबनाई गई है वास्तु कला की भव्यता को प्रदर्शित करती है, जिसमें जटिल भित्ति चित्र और मूर्तियां है जो एक बीते युग की कलात्मक उत्कृष्ट को दर्शाती है। बालकृष्ण विट्ठलदास दोशी या बीवी दोशी को कलाकार., शिक्षक, और आधुनिक भारतीय वास्तुकला के जनक के रूप में जाना जाता है। वे भारतीय वास्तुकला में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है और भारत में वास्तु कला संबंधित चर्चा के विकास में उनके योगदान के लिए जाने जाते है। जिस प्रकार हमें अजंता और एलोरा की रॉक कट गुफाएं वास्तुशिल्प का चमत्कार है जो विश्व धरोहर के सूची में भी पाई जाती है। अजंता और एलोरा की दोनों गुफाओं को दक्कन पठार के ज्वालामुखीय लावा से काटा जाता है। अजंता में कुल 29 गुफाएं है। इन गुफाओं में कुछ अद्भुत बहुत ही अच्छी तरह से संरक्षित पेंटिंग है। जिसमें दो महान बोधिसत्व पद्मपाणि और अवलोकेश्वर पेंटिंग शामिल है। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि उनमें से सबसे दिलचस्प जाटक कथाएं है जो बुद्ध के पिछले अवतारों से संबंधित विविध कहानियों को दर्शाती है। अजंता में स्थित कुछ गुफाएं सबसे दैवी मूर्तियों में से कुछ को बढ़ावा देती है। जैसे की गुफा संख्या 17 में फ्लाइंग अप्सरा और बुद्ध की छवि बस आश्चर्यजनक है। भौगोलिक स्थिति और स्थापत्य शैली के आधार पर हिंदू मंदिरों को दो व्यापक श्रेणियां में वर्गीकृत किया जा सकता है द्रविड़ मंदिर (२) नागर (१) वास्तुकला की एक तीसरी शैली वेसर भी पाई जाती है यह नगर और द्रविड़ दोनों शैलियों से अनुकूल वाली एक संकर शैली है। भारत की सबसे पुरानी कला सिंधु सभ्यता की स्थापत्य कला : प्राचीन भारत की दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता की कला अत्यंत प्राचीन है। भारतीय वास्तु कला का विकास4500 से ज्यादा सालों में हुआ है, जिसकी शुरुआत 2600 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी सभ्यता से हुई थी।

1 भारतीय वास्तु शास्त्र क्या है और उसकी विशेषताएं :

वास्तु शास्त्र जिसे हम वास्तु विद्या भी कहते हैं भारतीय स्थापत्य कला और विज्ञान एक प्राचीन शस्त्र है। यह विज्ञान भवनों, मंदिरों और अन्य संरचनाओं के निर्माण और डिजाइन में प्राकृतिक शक्तियों और तत्वों का संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। प्राचीन भारतीय वास्तु कला विभिन्न सभ्यताओं के प्रभाव से बनी गई एक तानेबाने की तरह है। हमें इसके विपरीत - अजंता और एलोरा की प्राचीन गुफाएं चट्टान को काटकर बनाई गई वास्तुकला की भव्यता को प्रदर्शित करती है, यहां हमें जटिल भित्ति चित्र और मूर्तियां देखने को प्राप्त होती है जो की हमें बीते युग की कलात्मक उत्कृष्ट को दर्शाती है। वास्तु कला में भारत की सबसे पुरानी इमारत सांची स्तूप मानी जाती है। भारत ने वास्तु कला की शुरुआत गुप्त वास्तुकला से मानी जाती है फिर भी भारत में बची हुई अधिकांश प्रथम स्वतंत्र संरचनाओं का श्रैय गुप्त काल को दिया जाता है, और विशेष रूप से हिंदू मंदिर वास्तुकला की शुरुआत को माना जाता है। भारतीय कला में अभिव्यक्ति की ही प्रधानता है बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक भाव के अंकन में ही भारतीय कलाकार का मन अधिक रमा है। बुद्ध की मूर्तियों की मुख्य की दिव्य शांति इसका प्रमाण है। ध्वजस्तंभ आदि सभी धर्म से ही संबंध थे। यह भारतीय कला की मुख्य विशेषताएं रही है। इस प्रकार भारतीय स्थापत्य कला की विशेषताओं में मेहराब, स्तंभ, विमान के ऊपर प्रतीकात्मक कला और नक्काशीदार रूपांकन शामिल हैं जो विभिन्न विश्वार प्रणालियों को दर्शाते हैं। सामान्य रूपांकनों के उदाहरण

में शामिल है कमल का फूल :, नर्तक और अन्य मानव आकृतियां हमें देखने को मिलती है।

2 भारत में वास्तुकला कितने प्रकार की और पुरानी है :

भारतीय वास्तुकला भारत के इतिहास, संस्कृति और धर्म में निहित है। कई स्थापत्य शैलियों और परंपराओं में सबसे प्रसिद्ध मंदिर वास्तुकला की दो प्रमुख शैलियां है जिन्हें उत्तर में नागरा और दक्षिण में द्रविड़ शैली के नाम से जाना जाता है। तीसरी शैली वेसर शैली, नागरा और द्रविड़ वास्तु कला शैली का मिश्रण है। हिंदू मंदिर वास्तुकला और इंडो इस्लामिक वास्तु कला की कई - किस्में शामिल है, विशेष रूप से राजपूत वास्तुकला, मुगल वास्तुकला, दक्षिण भारतीय वास्तुकला और इंडो - सरसेनिक वास्तुकलाएंहैं। हम इस तरह की वास्तुकला को धार्मिक भी कह सकते हैं। इसमें चर्च, मस्जिद, चैपल, मंदिर भवन, अभयारण्य आदि शामिल हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो मुख्य वास्तुकला प्रकार घरेलू ,धार्मिक, सरकारी, मनोरंजक, शैक्षिक, कल्याण, वाणिज्यिक और औद्योगिक है। जावा में भारतीय संस्कृति के प्रवेश के कुछ प्रमाण 4वी शती ईसवी के मिलते हैं। वहां के अनेक स्मारकों से पता लगता है कि मध्य जावा में 625 से 928 ईतक . वास्तुकला का स्वर्ण काल और पूर्वी जावा में928 से 1478 ईतक देखने को मिलता है। .

3 वास्तुकला का अर्थ, मुख्यकार्य और उद्देश्य :

वास्तुकला का सीधा तात्पर्य किसी इमारत के डिजाइन से है। इसका मतलब केवल प्रारंभिक ड्राइंग नहीं है बल्कि यह कैसे बनाया जाता है, इसे कहां बनाया जाता है और इसका कार्य क्या है, इसकी प्रक्रिया भी है। वास्तु कला का उद्देश्य इसे परिभाषित करने में महत्वपूर्ण है। इस प्रकार वास्तु शास्त्र एक प्राचीन भारतीय वास्तुकला और डिजाइन प्रणाली है जिसका उद्देश्य रहने और काम करने की जगहों के भीतर ऊर्जा प्रवाह को संतुलित करना है। इसमें कल्याण, समृद्धि, और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए इमारतों के लेआउट स्थानिक व्यवस्था और दिशात्मक संरेखण से संबंधित दिशानिर्देश - शामिल है। इस प्रकार वास्तुकला, डिजाइनिंग, और निर्माण की कला और तकनीक, जो निर्माण से जुड़े कौशल से अलग है। वास्तुकला का अभ्यास व्यावहारिक और अभिव्यंजक दोनों आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियोजित किया जाता है, और इस प्रकार यह उपयोगितावादी और सौंदर्यवादी दोनों उद्देश्यों को पूरा करता है।

4 वास्तु का महत्व और ग्रंथ :

सर्वप्रथम मूल रूप से वास्तु कला का उद्देश्य भौतिक वातावरण बनाना है जिसमें लोग रहते हैं, लेकिन वास्तुकला सिर्फ निर्माण वातावरण से कहीं ज्यादा है, यह हमारी संस्कृति का भी हिस्सा है। यह इस बात का प्रतिनिधित्व करता है कि हम खुद को कैसे देखते हैं, और साथ ही साथ हम दुनिया को भी कैसे देखते हैं। इस दृष्टि से वास्तुशास्त्र से संबंधित आधारभूत भारतीय ग्रंथों में "मयमतम्", "मानसार", "समरांगन", "सूत्रधार", "विश्वकर्मा", "वास्तु शास्त्रप्रमुख "ब्रहत संहिता" और " को सर्वाधिक प्रामाणिक "ब्रहत संहिता" हैं। इन सभी में माना जाता है और यह वास्तुशास्त्र के महत्व पूर्ण सिद्धांतों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करता है।

5 वास्तु में नींव तथा दिशाओं का निर्धारण कैसे किया जाता है :

नींव की खुदाई से पहले दिशा और कोण का ध्यान देना जरूरी होता है। नींव की खुदाई हमेशा ईशान कोण से शुरू की जाती है। ईशान के बाद में अग्नेय की ओर खुदाई की जाती है। वास्तु में दिशाएं खोजने के लिए, अपने स्थान के केंद्र का पता लगाने के लिए कंपास का उपयोग करके सभी दिशाओं को सही उत्तर दिशा में चिन्हित किया जाता है। इन्हीं केदो से उसे क्षेत्र की पहचान की जाती है जहां मुख्य प्रवेश द्वार स्थित होता है, जिसे मुख दिशा के रूप में जाना जाता है। यह विधि वास्तु में उचित संरेखण सुनिश्चित करती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार बिस्तर दक्षिणपश्चिम दिशा में और - सिरहाना दक्षिण या पूर्व दिशा में होना चाहिए इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाता है, क्योंकि यह दिशा आपके शरीर में सकारात्मक तरंगे सोखती है। इसी प्रकार अपने बिस्तर को बाथरूम के दीवार के सामने नहीं रखा जाता है और हवा के संचार के लिए अपने बिस्तर के दोनों और जगह रखी जाती है। बीम, सोफिट और ढलान वाली छत के नीचे सोने से बचा जाता है। यदि अपरिहार्य हो तो कपड़े या पेंट से छत के वास्तुशिल्प तत्वों को छिपाया जाता है।

6 वास्तु में दोष अथवा शुभ अशुभ कैसे पता करें :

वास्तु के अनुसार एक आदर्श मकान का मेन गेट सिर्फ पूर्व या उत्तर दिशा में ही रखा जाता है। वही आपके घर का ढलान पूर्व, उत्तर या पूर्वकी (ईशान कोण) ऊत्तर-ओर होना शुभ माना जाता है। इस तरह वास्तु के अनुसार घर के कमरे, हॉल, किचन, बाथरूम और बैडरूम एक खास दिशा में रखे जाते हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार किचन का दरवाजा हमेशा पश्चिम या उत्तर दिशा की ओर रखा जाता है। यदि उत्तर दिशा में दरवाजा उपलब्ध नहीं है तो आप दक्षिण पूर्व दिशा की ओर खुलने वाले दरवाजे भी बनाया जा सकता हैं। सूरज की किरणें सेहत के लिए हमेशा फायदेमंद होती है और युवी किरणें बैक्टीरिया को खत्म किरने में भी मददगार साबित हो सकती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार किचन के सामने या मेन गेट के सामने कभी भी शौचालय नहीं बनाया जाता है। इससे घर में वास्तु दोष लगा सकता है। इसके साथ ही शौचालय की टॉयलेट सीट हमेशा पश्चिम या उत्तर-पश्चिम दिशा में रखी जाती है। अगर आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा की ओर होता है, तो यह वास्तु दोष का कारण माना जाता है। वहीं पूर्व दिशा में टॉयलेट

होने पर भी वास्तु दोष माना जाता है। वही घर त्रिकोना, कॉर्नर वाला या चौराहे पर या फिर दक्षिण दिशा में हो तो भी व्यक्ति को वास्तु दोष का सामना करना पड़ सकता हैं। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में रखने से धन का आगमन होता है। मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखने से घर में शांति बनी रहती है। जबकि पश्चिम दिशा में मुख्य द्वार रहने से सौभाग्य में वृद्धि होती है, इस प्रकार से घर का मुख्य दरवाजा हमेशा अंदर की ओर खुलना चाहिए। बाहर की ओर खुलना शुभ नहीं माना जाता है। ऐसा होने पर घर में धन टिकने में परेशानियां आ सकती है इसके साथ ही दरवाजा खोलने और बंद करते समय आवाज नहीं होनी चाहिए इस बात का ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार से वास्तु दोष में शुभ अशुभ इन बातों पर ध्यान दिया जाता है।

7 अजंता और एलोरा विश्व धरोहर स्थल :

महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद (छत्रपति संभाजी नगर) जिले में अजंता और एलोरा की बुद्ध कालीन गुफाएं और स्मारक हमें देखने को मिलती है। यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से480 या 650 तक की तिथि हमें देखने को मिलती है। भारत के सरकारी पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा वर्णित पेंटिंग और मूर्तियां भारतीय कला के बेहतरीन जीवित उदाहरण है। जो बौद्ध धर्म की उत्कृष्ट कलाकृतियों को दर्शाती है। अजंता और एलोरा की यह गुफाएं वास्तुशिल्प का चमत्कार मानी जाती है जो विश्व धरोहर सूची में भी पाई जाती है। अजंता में हमें कुल 29 गुफाएं देखने को मिलती है। इन गुफा में कुछ अप्रतिम सौंदर्य वाली संरक्षित पेंटिंग हैं, जिसमें बोधिसत्व पद्मपाणि और अवलोकेश्वर की पेंटिंग शामिल है। अजंता की कुछ गुफाओं में दैवीय मूर्तियों में से कुछ को बढ़ावा देती है। इन गुफाओं में संख्या 17 में फ्लाइंग अप्सरा और बुद्ध की छवि बस आश्चर्यजनक है।

डॉभारतीय कला की अधिकांश वास्तु : प्रीति शर्मा . प्राकृतिक और भक्ति पूर्ण रही है, यह कृतियां कारीगरों द्वारा परंपरा में डूब गई हुई बनाई गई थी। यह बदलाव के कई चरणों से गुजर चुकी थी। भारत में विविधता से भरे देश के अनेक रूप में कला और वास्तुकला की कई शाही और क्षेत्रीय शैलियों का निर्माण किया गया है। यहां पर मुख्य रूप से मौर्य युग में पिल्ल और स्तूप एक गौरवशाली युग की प्रबुद्ध दृष्टि की गवाही देते है। प्राचीन भारत में स्तूप के बीच सबसे प्रसिद्ध सांची, अमरावती और सारनाथ और उसी प्रकार अजंता एलोरा के मंदिर और भित्ति चित्र कॉल और पल्लवन राजाओं की शानदार विरासत है। प्राचीन साम्राज्य की कला और वास्तुकला में गुप्त साम्राज्य के शासन के दौरान नई ऊंचाईयों को छुआ है। इस प्रकार दक्षिण भारत ने भी कला और वास्तुकला में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यह भारत को आध्यात्मिक विरासत के साथसाथ एक - गौरवशाली विरासत की याद दिलाने का साथ प्रदान करते है।

गैरी माइकल टार्टकोव)1990) जब बौद्ध धर्म भारत में उभरा था यह उस समय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण धर्म था, 1947 में भारतीय स्वतंत्रता के समय उनके अनुयाई थे। वास्तव में उसे समय पर विश्वास हिमालय में स्थित तिब्बतियों के केवल एक छोटे समूह द्वारा किया गया था। फिर भी उस समय एक असाधारण व्यक्ति के प्रयासों के अनुसार डॉबी . आर अंबेडकर द्वारा पिछले कई वर्षों में उल्लेखनीय छल का अनुभव किया था। इस नए बौद्ध आंदोलन द्वारा अपनाई गई वास्तुकला और चित्रमय इमेजरी एक ऐसी प्रक्रिया को प्रकट करती है जिसके द्वारा प्राचीन प्रतिको का पुनः व्याख्या की गई थी और एक नए और अलग सामाजिक संदर्भ में अर्थ दिया गया था।

घाणेवाडी तालाब गुरुत्वाकर्षण बल का अनुपम : : उदाहरण

गुरुत्वाकर्षण बल)Gravity) भौतिकी का एक प्रमुख और मौलिक सिद्धांत है, जो सभी भौतिक वस्तुओं के बीच आकर्षण की शक्ति को वर्णित करता है। यह बल न केवल पृथ्वी पर वस्तुओं को नीचे गिरने का कारण बनता हैं, बल्कि यह ब्रह्मांडीय संरचना को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सौरमंडल में ग्रहों की कक्षाएँ, तारे, आकाशगंगाएँ और ब्लैक होल जैसी खगोलीय घटनाएँ इसी बल के कारण कार्यान्वित होती हैं।

गुरुत्वाकर्षण का अध्ययन सदियों से वैज्ञानिकों के लिए जिज्ञासा का विषय रहा है। यह बल सर्वप्रथम 17वीं सदी में सर आइज़ैक न्यूटन द्वारा उनके प्रसिद्ध के माध्यम से "गुरुत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियम" व्याख्यायित किया गया। न्यूटन ने यह समझाया कि सभी वस्तुएँ, चाहे वे कितनी भी छोटी या बड़ी क्यों न हों, एक दूसरे की ओर आकर्षित होती हैं, और यह आकर्षण उनके द्रव्यमान के सीधे अनुपात में तथा उनके बीच की दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है।

20वीं सदी में, अल्बर्ट आइंस्टाइन ने अपने सामान्य सापेक्षता सिद्धांत)General Theory of Relativity) के माध्यम से गुरुत्वाकर्षण को एक नए दृष्टिकोण से समझाया। उन्होंने इसे द्रव्यमान और ऊर्जा द्वारा समय-) स्थानSpace-Time) के वक्रण का परिणाम बताया। यह अवधारणा खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान में क्रांतिकारी साबित हुई।

इस शोध प्रबंध में, गुरुत्वाकर्षण बल की मूलभूत अवधारणाओं, इसके ऐतिहासिक विकास, और इसके आधुनिक अनुप्रयोगों का गहन विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, गुरुत्वाकर्षण से संबंधित उन प्रश्नों पर भी विचार किया जाएगा, जो अभी तक अनुत्तरित हैं। यह अध्ययन हमें न केवल ब्रह्मांड की बेहतर समझ प्रदान करेगा, बल्कि संभावित वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के नए रास्ते भी खोलेगा।

गुरुत्वाकर्षण बल, जिसे हम Gravitational Force कहते हैं, का प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में कई रूपों में देखा जा सकता है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण महाराष्ट्र के जालना जिले में स्थित घाणेवाडी तालाब है। यह तालाब न केवल जालना शहरवासियों की प्यास बुझाने का प्रमुख स्रोत है, बल्कि गुरुत्वाकर्षण बल के अद्भुत प्रयोग का भी प्रमाण है।

8 घाणेवाडी तालाब का निर्माण और इतिहास :

घाणेवाडी तालाब जालना से लगभग 9 किलोमीटर की दूरी पर कुंडलिका नदी पर स्थित है। इसका निर्माण हैदराबाद दक्कन के सातवें निजाम, मीर उस्मान अली खान, के कार्यकाल में किया गया।

तालाब का निर्माण कार्य :

इंजीनियरिंग नेतृत्वचीफ इंजीनियर अली नवाबजंग : बहादुर और उनके अधीन सहायक इंजीनियर दिलदार हुसैन तथा जालना के सामाजिक कार्यकर्ता एवं दानशूर व्यक्ति बेझंजी ने आर्थिक सहायता की।

निर्माण काल इस परियोजना को :1925 में स्वीकृति मिली और 1930 में पूर्ण किया गया। स्पेशल इंजीनियर अहमद मिर्जा ने इसे अंतिम रूप दिया। :

घाणेवाडी तालाब की संरचना और विशेषताएँ

भौगोलिक स्थिति :

संचयन क्षेत्र :614 एकड़।

जल संचयन क्षमता :14 मिलियन क्यूबिक मीटर)mm3) ।

शीर्ष सीमा स्तर)TBL) : 529.72 मीटर।

पूर्ण जल स्तर)FLT) : 529.55 मीटर, 18 फिट है।

ऊंचाई को सामान करना)R.L) : 1727 फिट।

तकनीकी महत्व :

यह तालाब जालना के जल शुद्धिकरण केंद्र से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दिलचस्प बात यह है कि इस दूरी पर पानी बिजली के पंप या मोटर की सहायता के बिना केवल गुरुत्वाकर्षण बल के सिद्धांत का उपयोग करके पहुँचता है।

गुरुत्वाकर्षण बल का उपयोग :

घाणेवाडी तालाब से जल शुद्धिकरण केंद्र तक पानी के प्रवाह के पीछे प्रमुख कारण क्षेत्र की ढलान और गुरुत्वाकर्षण बल है।

पानी की स्वाभाविक ढलान इसे बिना किसी अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत के जालना तक पहुँचने में मदद करती है।

यह प्रणाली उस समय की इंजीनियरिंग कुशलता को दर्शाती है, जब तकनीकी उपकरण सीमित थे।

वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ :

पहले, तालाब से पानी बिना किसी बाधा के दिन में दो बार आता था।

वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि और जल स्रोतों पर बढ़ते दबाव के कारण पानी सप्ताह में केवल एक बार मिलता है।

जायकवाड़ी के नाथसागर से पानी लाने के लिए 88 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन स्थापित की गई है, जो बिजली पर आधारित है और इसका मासिक खर्च 43-45 लाख रुपये है।

संभावित समाधान :

यदि घाणेवाडी तालाब के क्षेत्र और ऊँचाई को बढ़ाया जाए, तो इसे और अधिक जल संग्रहण सक्षम बनाया जा सकता है। इससे न केवल जल संकट कम होगा, बल्कि बिजली खर्च की बचत भी संभव होगी।

तुलनात्मक उदाहरण :

निजामाबाद, आंध्र प्रदेशयहाँ भी इसी प्रकार का : गुरुत्वाकर्षण आधारित जल आपूर्ति सिस्टम कार्य करता है

औरंगाबाद यह :की पनचक्की (छत्रपति संभाजीनगर) जल आपूर्ति प्रणाली भी गुरुत्वाकर्षण बल का उपयोग कर पानी पहुंचाने का ऐतिहासिक उदाहरण है।

9 निष्कर्ष :

वास्तुशास्त्र भारतीय परंपरा का एक प्राचीन ज्ञान है, जो भवन निर्माण, दिशाओं और ऊर्जा संतुलन पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करना है ताकि व्यक्ति के जीवन में सुखशांति-, समृद्धि और स्वास्थ्य बना रहे। यह दिशा, पर्यावरण, ऊर्जा, और संरचना के सही उपयोग से जीवन को सकारात्मक बनाता है। वास्तुशास्त्र परंपरा और विज्ञान का संतुलन है। यह न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर भी लाभकारी सिद्ध होता है। हालांकि, इसे अंधविश्वास की बजाय वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनाना चाहिए, उसी प्रकार से घाणेवाडी तालाब न केवल हमारे जालना शहर के जल आपूर्ति का स्रोत है, बल्कि यह गुरुत्वाकर्षण बल के उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ऐतिहासिक जलाशय का महत्व आज भी उतना ही है जितना इसके निर्माण के समय था। इसे संरक्षित और उन्नत करना जल संकट के समाधान के साथसाथ हमारी सांस्कृतिक - धरोहर को संरक्षित करने का भी महत्वपूर्ण कदम होगा।

संदर्भ

01) वास्तु चिंतामणि, वास्तु परिचय संपादक : नरेंद्र कुमार बडजात्या छिंदवाड़ा .पेज.03.

02) दिशाओं का शुभाशुभ विचार, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगंबर जैन संस्कृति न्यास" ज्योति नीलय "गरुड़ खांब चौक, इतवारी, नागपुर .पेज 37.

03) गैरी माइकल टार्टकोव, कल और पहचान :उदय की एक नई बौद्ध इमेजरी, कला जर्नल,1990 वॉल्यूम 49, अंक 4 पीपी 40 9-416.

4) डॉ .प्रीति शर्मा प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति, मानविकी और सामाजिक विज्ञान में नोबेल रिसर्च के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2016, वॉल्यूम 3, अंक 1, पीपी 24-26.

5) अपना जालना जिला, प्रा.भगवान काळे, राजमुद्रा ऑफसेट चिकलठाणा, औरंगाबाद, (छत्रपती संभाजीनगर (पीपी 37.